हैं, केवल विश्व के त्रिदेव ही नहीं बल्कि परात्पर पुरुष हैं, करालवदना काली भी प्रेममयी और मंगलदायिनी माता ही हैं, कुरुक्षेत्र के स्वामी दिव्य सखा और सारथी हैं, सभी प्राणियों के मनमोहन हैं, अवतार श्रीकृष्ण हैं। इसमें संदेह नहीं कि जगत के इस संग्राम, सघर्ष और समस्त अस्त-व्यस्तता में से होकर प्रभु हमें उस परात्पर की ओर ही बढ़ा रहे हैं जिन्हें भले अभी हम देख न पायें, लेकिन लक्ष्य पर पहुंचने के बाद हम पायेंगे कि आरंभ से ही हमारा हृदय इसी की तो मनोकामना कर रहा है। लेकिन उस पथ पर चलते हुए हमें जगत को जैसा वह है वैसा ही लेना होगा।

# पिता की पीड़ा

*मैं रक्षक, पालक, रचयिता हूँ. सम्मान वाहक अस्मिता हूँ.*
*परिवार के हर सदस्य का, मैं ही तो पिता हूँ.*

*हर किसी की विपत्ति में खड़ा हूँ. गलत का भी साथ देकर लड़ा हूँ.*
*परिवार का फर्ज निभाकर, समाज से अभी अलग पड़ा हूँ.*
*बच्चा अगर गलत करे, तो आंसू पी-पीकर जीता हूँ.*
*परिवार के हर सदस्य का, मैं ही तो पिता हूँ.*

*संतान सुख समृद्धि खातिर, खपाया अपना पैर सिर.*
*लोन भी लिया बैंक से, कर्ज से गया घिर.*
*महल बनाया शहर में, पैसे से अब रीता हूँ.*
*परिवार के हर सदस्य का, मैं ही तो पिता हूँ.*

*राशन भी आया और दवाई भी, कंगन क्रीम काजू रजाई भी.*
*पी जी बाद बी एड पढ़ाई भी, नीट कोचिंग गए भिलाई भी.*
*सभी ने की अपनी शौक पूरी, मैं पढ़ रहा बाइबिल गीता हूँ.*
*परिवार के हर सदस्य का, मैं ही तो पिता हूँ.*

*यदि किए तुम अच्छे काम, तब पाते तुम्ही मान-सम्मान.*
*परन्तु गलत काम पर तेरे, पूछते- क्या है तेरे बाप का नाम.*
*बुरे की जिम्मेदारी लेकर, गम-गरल का घूंट पीता हूँ.*
*परिवार के हर सदस्य का, मैं ही तो पिता हूँ.*

*गृहणियां रटती साड़ी-साड़ी, बाप-भाई पिए रोज ताड़ी.*
*बेटे की शौक नई-नई गाडी, बिक गया गाँव का घर-बाड़ी.*
*दुख अभाव कुसंगत में, लेट जाऊं वह मृत्यु-चिता हूँ.*
*परिवार के हर सदस्य का, मैं ही तो पिता हूँ.*

● **डॉ. रमेश कुमार टंडन**

कर समा
विकास वे
छूट गया

रूस की क
अलग-अल
रही। बैचल
कारण कुंठि
खींचती है,

राममं
करोड़
को कितना अ
तो अगले
नतीजों से ही
संभावना यही
हुई लाखों मौ
जनता से
जाएगा।

रत की जीवित

ालीह्ल, जिसमें
स्तुत करता है,
महिलाओं को
परंपरा की इस

ासान नहीं था।
झेलनी पड़ी।
विरोध किया।
ातर कला की
को भी अपनी

फिल्मी कहानी
ोटे गांवों की
क, फिर जिला
मंचों तक और
ाक–हर पड़ाव
ा न कोई बड़ा
ाल एक सशक्त
वेलक्षण क्षमता

ता था वह एक
लेकर मंच पर
स्वयं भीम बन
ीं। फिर द्रौपदी
ही क्षणों बाद
उठती। उनका
ुद्ध का प्रतीक।
हैं; उन्हें लगता

अपनाया और
की साधना को
र पद्म विभूषण
व की बात है।
उन्हें जनता ने
ावाज अब भी
वही स्वर सुनाई
कार, कृष्ण की

# पिता की पीड़ा

मैं रक्षक, पालक, रचयिता हूँ. सम्मान वाहक अस्मिता हूँ. परिवार के हर सदस्य का, मैं ही तो पिता हूँ.
हर किसी की विपत्ति में खड़ा हूँ. गलत का भी साथ देकर लड़ा हूँ. परिवार का फर्ज निभाकर, समाज से अभी अलग पड़ा हूँ.
बच्चा अगर गलत करे, तो आंसू पी-पीकर जीता हूँ. परिवार के हर सदस्य का, मैं ही तो पिता हूँ.
संतान सुख समृद्धि खातिर, खपाया अपना पैर सिर. लोन भी लिया बैंक से, कर्ज से गया घिर.
महल बनाया शहर में, पैसे से अब रीता हूँ. परिवार के हर सदस्य का, मैं ही तो पिता हूँ.
राशन भी आया और दवाई भी, कंगन क्रीम काजू रजाई भी. पी जी बाद बी एड पढ़ाई भी, नीट कोचिंग गए भिलाई भी.सभी ने की अपनी शौक पूरी, मैं पढ़ रहा बाइबिल गीता हूँ.
परिवार के हर सदस्य का, मैं ही तो पिता हूँ.
यदि किए तुम अच्छे काम, तब पाते तुम्ही मान-सम्मान. परन्तु गलत काम पर तेरे, पूछते- क्या है तेरे बाप का नाम. बुरे की जिम्मेदारी लेकर, गम-गरल का घूंट पीता हूँ. परिवार के हर सदस्य का, मैं ही तो पिता हूँ.
गृहणियां रटती साड़ी-साड़ी, बाप-भाई पिए रोज ताड़ी.
बेटे की शौक नई-नई गाडी, बिक गया गाँव का घर-बाड़ी. दुख अभाव कुसंगत में, लेट जाऊं वह मृत्यु-चिता हूँ. परिवार के हर सदस्य का, मैं ही तो पिता हूँ.

----ooo----

**डॉ. रमेश कुमार टंडन**
**खरसिया, छ.ग.**